ऋग्वैदिक काल का धार्मिक जीवन

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

हम ऋग्वैदिक काल की धार्मिक जीवन की विशेषताएँ के साथ ही धर्म की प्रकृति को भी समझेंगें.

धार्मिक जीवन की विशेषताएँ

- ऋग्वैदिक काल की धार्मिक जीवन की विशेषताएँ निम्नलिखित है.
- ऋग्वैदिक काल में धार्मिक दृष्टि से काफी विविधता मिलती है. इसमें एकेश्वरवाद, बहुदेववाद, सर्वेश्वरवाद सबका उल्लेख है.
- आर्य भारी संख्या में देवी देवताओं की पूजा करते थे. यास्क ने इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा है. 1. भुस्थानीय 2. आकाश 3. अन्तरिक्ष के देवता.
- आर्यों के प्रमुख देवता में इंद्र (वर्षा तथा वीरता का परिचायक), अग्नि (धरती के देवता, मनुष्यों एवं देवताओं के बीच मध्यस्थ देवता), वरुण (वायु के देवता, ऋतू, नैतिक नियमों के संचालक), नासत्य (डॉक्टर देवता), मित्र (इनका अधिकांश उल्लेख वरुण के साथ जोड़ी के रूप में आया है) आदि महत्वपूर्ण थे.
- आर्य देवियों की भी पूजा किया करते थे. इनमें उषा, अदिति, निशा आदि मुख्य थीं. हालाँकि इनका महत्व पुरुष देवताओं की अपेक्षा गौण था क्योंकि समाज पितृसत्तात्मक था.
- आर्य स्तुति वन्दना, यज्ञ, प्रार्थना आदि द्वारा अपने देवी देवताओं की पूजा करते थे.